Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

मध्यकाल में मुगल अमीर वर्ग का सांस्कृतिक जीवन

Krishan Kumar*

Extension Lecturer, Department of History, SMSD Govt. College Nangal Chaudhary

सारांश – ***मध्यकाल में भी सांस्कृतिक गतिविधियों को खूब प्रोत्साहन मिला। अमीर वर्ग सांस्कृतिक गतिविधियों में बहुत धनराशि व्यय करते थे, इनमें से कुछ सांस्कृतिक गतिविधियां उनके स्वयं के लिए तथा कुछ समाज के लोगों की भलाई के लिए भी होती थी। मध्यकाल में भी सामान्यतः मनोरंजन के लगभग वही साधन प्रचलित थे, जो आजकल हैं, यदि कोई विशेष अंतर है तो खेलने के कुछ ढंगों में है।***

----------X----------

18वीं सदी में (1700-1750) भी अमीर वर्ग के सामाजिक जीवन में आमोद-प्रमोद का विशेष स्थान था। उनके आवास परिसर में विभिन्न प्रकार के खेलों के खेलने की व्यवस्था होती थी जिनका वर्णन इस प्रकार हैः-

(क) ताश:

ताश का खेल एक पुराना खेल है जो मुसलमानों के आने से पूर्व भी भारत में खेला जाता था।[1] कुल मिलाकर 144 ताश के पत्तों में 12-12 पत्तों के 12 समूह हुआ करते थे। उस समय सभी पत्तों पर चित्र होते थे। आज के ताश के खेल में और उस जमाने के खेल में यही अंतर था। सबसे बड़ा पत्ता बादशाह था, उसके बाद वजीर का पत्ता आता था। अमीर वर्ग में यह खेल काफी प्रचलित था। राजस्थान में गोलाकार ताश के पत्तों का प्रचलन था। इनकी गोलाई आठ सैं.मी. के लगभग होती थी। एक ताश पर शक्टासुर का वध करते हुए कृष्ण का चित्र अंकित था।[2]

(ख) शतरंज:

यह भी भारत का पुराना खेल है जो उस समय बादशाह, अमीर और अन्य सामान्य लोगों में प्रचलित था। ताज उल मआसिर के लेखक हसन निजामी, अमीर खुसरो और पद्मावत् के लेखक मलिक मुहम्मद जायसी ने कई स्थानों पर इस खेल का उल्लेख किया है।[3] मुगल अमीरों का भी यह एक प्रिय खेल था। शतरंज के खेल के द्वारा वे अपनी योजनाओं के बनने और बिगड़ने तथा हार-जीत की बातें सीखते थे। कई बार बाजियां लगती थी और मुककाबले होते थे।[4]

(ग) चौपड़:

चैपड़ को चैसर भी कहा जाता था। चैपड़ एक प्राचीन भारतीय खेल था। आईन-ए-अकबरी के अनुसार चैसर में सोलह मोहरे होती थी। उन मोहरों की शक्ल एक जैसी होती थी।[5] प्रत्येक चार मोहरे एक ही रंग के होते थे और सभी एक ही दिशा में चालें चलते थे। औरंगजेब की बेटी जेबुनिन्सा को यह खेल अत्यन्त प्रिय था।[6]

(घ) चंदन मंडल:

यह वस्तुतः चैपड़ का ही सुधरा हुआ रूप था जिसमें खिलाड़ियों की संख्या सोलह होती थी तथा उनमें बराबर-बराबर बांटने के लिए गोटियों की संख्या चैंसठ कर दी गई थी।[7]

(ह) लाल-तुर्की:

यह खेल दस खानों के बोर्ड पर नो गोटियों से खेला जाता था। खेल की दो स्थितियां होती थी। प्रथम खिलाड़ी अपनी सभी नौ गोटियों को बोर्ड पर रख देता था। दूसरी स्थिति में सीधी रेखा के रिक्त स्थान पर गोटी को रखने के सामान्य नियम

[1] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, नई दिल्ली, 1976, पृष्ठ 55
[2] ए॰सी॰ दास, बी॰एन॰ पुरी, पी॰एन॰ चैपड़ा, भारत का सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 58
[3] के.एम.अशरफ, भारत के निवासियों का जीवन और उनकी परिस्थितियां, हिन्दी अनुवाद के॰एस॰ लाल, दिल्ली, 1990, पृष्ठ 216
[4] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 58
[5] अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ब्लौचमैन, खण्ड-1, पृष्ठ 316
[6] मुहम्मद उमर, "भारतीय संस्कृति का मुसलमानों पर प्रभाव, हिन्दी अनुवाद, डी. जानकी प्रसाद शर्मा, दिल्ली, 2001, पृष्ठ 203
[7] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, दिल्ली, 1991, पृष्ठ 40

www.ignited.in

द्वारा अपने विरोधी की एक के अतिरिक्त समस्त गोटी को पकड़ लेता था।[8]

(ल) संगीत एवं नृत्य:

औरंगजेब के अथक परिश्रम एवं निन्तर विरोध के बाद भी देश से संगीत समाप्त न हो सका। विलासी अमीर अपने हरम में बड़ी संख्या में नृतकियां रखते थे और नृत्य तथा संगीत समारोहों के आयोजन द्वारा भरपूर मनोरंजन करते थे। जन साधारण में भी संगीत के प्रति पर्याप्त रूचि थी।[9] दरगाह कुला खान कहते हैं कि दिल्ली में अमीर खास जगह के पास इकट्टे होकर मुशायरा कर आनन्द लेते थे।[10] एतमाउद्दौला कमरूद्दीन खान के दरबार में खुशहाली राय जानी नामक प्रसिद्ध नृतकी थी इसी प्रकार सौलत जंग सुबह की प्रार्थना के बाद मध्य रात्रि तक का समय संगीतकारों के मध्य गुजारता था।[11] नवाब मुहम्मद जफर खान प्रत्येक वर्ष तीन से छह महीने तक का समय संगीतकारों व नृतकियों की संगत में व्यतीत करता था। शुजाउद्दौला ने लुतफन निशा की बेट जो एक नृतकी थी को इनाम स्वरूप सात हजार रूपये दिये थे।[12]

(व) अतिशबाजी एवं दीयों की सजावट:

औरंगजेब ने स्वयं अपने पुत्र मुहम्मद आजम के विवाह पर बड़े विशाल पैमाने पर आतिशबाजी का प्रबन्ध किया था। फर्रूखसियार के विवाह पर भी आतिशबाजी की थी तथा द्वीपों की सजावट भी हुई थी। हिन्दुओं में द्वीपों द्वारा सजावट का विशेष प्रचलन था।[13]

(2) मैदानी खेलः

अमीर वर्ग मैदानी खेलों में भी विशेष रूचि लिया करते थे। वे कुश्ती, तैरना, शिकार खेलना, घुड़दौड़, हिसंक पशुओं की लड़ाईयां आदि में विशेष रूचि रखते थे। इन खेलों में हिन्दू, मुस्लिम दोनो वर्गों के अमीर इन खेलों में यथावत भाग लिया करते थे जिनका वर्णन इस प्रकार हैः-

(क) जानवरों की लड़ाई:

जानवरों को आपस में लड़ाना उस समय प्रचलित मनोरंजन का एक लोकप्रिय साधन था। प्शुओं की लड़ाईयों में हाथियों की लड़ाई काफी आनन्दमयी तथा प्रभावशाली होती थी। आसफउद्दौला के पास चार सौ हाथी थे वह अपना ज्यादातर समय हाथियों की लड़ाई में बिताता था। नवाब साअदत अली खाँ को भी हाथियों की लड़ाई बड़ी पसन्द थी।[14] अलवर्दी खान महावत जंग को मुर्गों की लड़ाईयां देखने का शौक था इसके लिए वे विशेष तौर पर ढक्खन से मुर्गे मंगवाया करता था।

इसके अतिरिक्त कबूतरबाजी का शौक भी था। इसके लिए तुरान तथा ईरान जैसे देशों से कबूतर मंगवाते थे और इस खेल के लिए उन्हें तैयार करते थे। शम्सउद्दौला खान-ए-दुरान इसको कबूतरबाजी में महारत हासिल थी।[15]

(ख) शिकार खेलना:

शिकार खेलना मनोरंजन के उत्तम साधनों में से एक था। जिसमें बादशाह और अमीर भाग लेते थे। हाथी, शेर, बाघ, जंगली भैंसा आदि पशुओं के शिकार के लिए अमीर विशेष तैयारी करते थे।[16] शुजाउऊद्दौला प्रातः काल जन्दी ही शिकार के लिए निकल जाता देर शाम को वापस शिकार करके आता था।[17]

(ग) चैगान:

इस खेल को आजकल पोलो कहते हैं, यह उस समय भी आज की तरह खेला जाता था। इस खेल में मुगल बादशाह और अमीर बड़े शौक के साथ भाग जेते थे। अकबर ने चैगान के खेल के लिए रोशनी देने वाली गेंद बनाई थी जिससे रात के अंधेरे में भी इसका खेलना संभव हो गया था।[18] इसके मैदान की परिधि एक कोस तथा भूमि सममतल होती थी। फरूर्खसियर स्वयं चैगान का एक बहुत शौकीन था।

---

[8] मायावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 41

[9] खाफी खां, मुंतखब-उल-लुबाब, अंग्रेजी अनुवाद इलियट एण्ड डाऊसन, भाग-7, दिल्ली, 2008, पृष्ठ 168-169

[10] दरगाह कुली खान मुरक्का-ए-देहली, अंग्रेजी अनुवाद चन्द्र शेखर शमामित्र चिनाय, दिल्ली, 1989, पृष्ठ 24

[11] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सैंचरी, दिल्ली, 1998, पृष्ठ 410-11

[12] शाहनवाज खान मआसिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ बेवरिज, दिल्ली, 1999, भाग-2, पृष्ठ 866

[13] सैय्यद गुलाब हुसैन खान 'सियार-उल-मुताखरीन, भाग-1, अंग्रेजी अनुवाद, जे॰एन॰ सरकार, नई दिल्ली, 1986, पृष्ठ 26

[14] शाहनवाज खान मआसिर-उल-उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच. बेवरिज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 279-80

[15] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411

[16] पुष्पा सूरी, सोशल कंडीशन इन एटीन्थ सेन्चुरी आफ नोरदन इण्डिया, दिल्ली, 1977, पृष्ठ 164

[17] शाहनवाज खान मआसिर उल उमरा, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ बेवरिज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 867

[18] अबुल फजल, आइन-ए-अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद एच॰ब्लौचमैन, खण्ड-1, पृष्ठ 310

www.ignited.in

अन्य मनोरंजन के साधन:

अमीर वर्ग का एक अन्य शौक नौका विहार था। वे अपने परिवार के सदस्यों के साथ बड़ी-बड़ी नदियों में नौका विहार करते थे। इस कार्य के लिए प्रयोग में आने वाली नौकाएं भी उच्च श्रेणी की होती थी, इन नौकाओं को मयूर पंख कहते थे। अमीर अपने परिवार के साथ कभी-कभी मुगल हरम की बेगमें भी रात में नौका विहार करती थी।[19] मीना बाजार भी उस समय लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त कुश्ती देखना, बाजीगरी, बागवानी और घुड़दौड़ आदि के द्वारा भी अपना मनोरंजन करते थे।[20]

बंगाल के नवाब मीर जाफर का पुत्र मीरन हमेशा पतंगबाजी में मशगुल रहता था। इसके अलावा आसफउद्दौजा भी अपने समय में पतंगबाजी का बड़ा शौकीन था। कुश्ती में पहलवान अखाड़े में एक दूसरे के सामने खड़े होते थे। एक दूसरे को पराजित करने की कोशिश करते थे। जिससे अमीरों का बड़ा मनोरंजन होता था।[21] इस प्रकार उपर्युक्त साधनों के द्वारा वे अपना मनोरंजन करते थे।

हिंदू त्यौहार व समारोह:

हिंदू अमीर वर्ग के सामाजिक जीवन में त्यौहारों का महत्वपूर्ण स्थान था। वे भिन्न-भिन्न अवसरों पर कई त्यौहार मनाते थे। मुगल बादशाहों ने हिन्दू त्यौहारों को भी अपने दरबारी कार्यक्रमों में स्थान दिया था।[22]

अ. बसंत पंचमी:

बसंत पंचमी का त्यौहार जो माघ महीने (जनवरी-फरवरी) में आता था। यह बसन्त ऋतु के आगमन का चिन्ह था। हिन्दू इसको सारे देश में बहुत उत्साह के साथ मनाते थे तथा सरस्वती का भी पूजन करते थे।[23] प्रकृति में नीवन सौन्दर्य के साथ ही स्त्रियां भी नाच-गाने के साथ ढोल, मृदंग का आनन्द उठाती थी। इसके अलावा मुगल दरबार में व हिन्दू अमीर वर्ग द्वारा भी इस त्यौहार को विशेष रूप से मनाया जाता था।[24]

ब. होलीः

यह भी हिन्दुओं का एक पुराना त्यौहार है। यह त्यौहार वियशाल परिमाण में अग्नि जलाकर, लोकप्रिय गाने गाकर और गुलाल बिखेर कर मनाया जाता था। यह त्यौहार फाल्गुन माह में मनाते हैं इस अवसर पर राजा-महाराजा भी अपने सामन्तों के साथा खेलते थे। इसी अवसर पर प्रसिद्ध मारवाड़ी डांडियों की रामत होती थी।[25]

स. विजयदशमी:

यह दशहरा के नाम से अधिक प्रसिद्ध था, क्षत्रिय लोगों के लिए यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्यौहार था। यह सितम्बर-अक्तूबर में भगवान राम द्वारा राक्षस रावण पर विजय की याद में मनाया जाता था। दशहरा पर्व के अवसर पर खिलअतें प्राप्त करने वालों में महाराजा जसवन्त सिंह, राजा जय सिंह, कुँवर रामसिंह तथा कुवँर पृथ्वीराज सिंह के नामों का उल्लेख मिलता है।[26] मुसलमान अमीर भी इसमें भाग लेते थे। अमीर खान इस त्यौहार को अपने घर के बहार मैदान में मनाता था। बादशाह फरूर्खसियार रावण के जलने का दृश्य देखने तक उपस्थित होता था।[27]

द. दीवाली:

दीपावली (दीपों की पंक्तियाँ) का त्यौहार हिंदुओं के महीने कार्तिक (अक्टूबर-नवम्बर) में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता था। इस दिन लोग लक्ष्मी पूजा करते थे तथा अपने घरों में रोशनी करते थे।[28] दीपों की श्रृंखला सजाकर न केवल हिन्दू ही अपना त्यौहार मनाते थे, बल्कि मुगल बादशाह और शहजादियाँ भी दीपों की सजावट पर खुशियां मनाती थी। प्रायः यमुना नदी के तट पर असंख्य दीप पंक्तिबद्ध किये जाते थे। राजपूतों में दीपावली के दिन सायंकाल शानदार दरबार का आयोजन किया जाता था। जिसे 'दीपमालिका का दरबार' कहा जाता था। दरबार में राजा अपने कर्मचारियों और सामन्तों को राजकीय पुरस्कार देकर

[19] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन सैंचरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411
[20] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 68
[21] मुहम्मद उमर मुस्लिम सोसाइटी इन नोरदन इण्डिया डयूरिंग द एटीन सैंचरी, पूर्वोक्त, पृष्ठ 411
[22] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 63
[23] जहीरूद्दीन मलिक द रेन ऑफ़ मुहम्मदशाह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 352
[24] मुहम्मद उमर 'भारतीय संस्कृति का मुसलमानों का प्रभाव, पूर्वोक्त, पृष्ठ 112
[25] डॉ. शिवदत्त दान बारहट जोधपुर राज्य का इतिहास, जयपुर, 1991, पृष्ठ 182
[26] मयावती भण्डारी, उत्तरी भारत में हिन्दू समाज, पूर्वोक्त, पृष्ठ 45
[27] जहीरूद्दीन मलिक द रेन ऑफ़ मुहम्मदशाह, पूर्वोक्त, पृष्ठ 352
[28] मिरजा कतील, हफ्त तकाशा, हिन्दी अनवाद, मुहम्मद उमर, संस्कृति के सात अध्याय, अलीगढ़, 1990, पृष्ठ 62-63

सम्मानित करता और राजकीय पदों पर नवीन नियुक्तियाँ भी करता था।[29]

ल. शिवरात्री:

इस दिन भगवान शिव की पूजा की जाती थी। विशेषतौर पर हिन्दू अमीर भगवान शिव का व्रत रखते थे। शिवलिंग पर जल चढ़ाया जाता था। इस प्रकार शिवरात्री को बड़े आदर और सम्मान के साथ मनाया जाता था। यह त्यौहार आज भी हिन्दू समाज में मनाया जाता है।[30]

व. रक्षा बंधन:

यह श्रावण महीने में मनाया जाता था, इस त्यौहार पर बहनें अपने भाई को राखी बांधती थी। जहांगीर इसे निगाहदस्त कहता था।[31] इस दिन ब्राह्मण भी अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बांधते थे। हिन्दू अमीर और सामान्य जन इस त्यौहार को श्रद्धापूर्वक मनाते थे। इसे 'राखी का त्योहार' कहा जाता था। यह पर्व आज भी हिन्दू समाज इसी प्रकार मनाया जाता है।[32]

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

अली, एम॰ अतहर: औरंगजेब कालीन मुगल अमीर वर्ग, हिन्दी अनुवाद, डॉ. राधेश्याम, दिल्ली, 1977

अली, एम॰ अतहर: नोबलिटी अंडर औरंगजेब, दिल्ली, पुनर्मुद्रित, 1997

इरविन, विलियम: द लैटर मुगल्स, दिल्ली, 2011

उपाध्याय, ओंकारनाथ: अकबर तथा जहांगीर के अन्तर्गत हिन्दू अमीर वर्ग, आगरा, 1980

उमर, मुहम्मद: अरबन कल्चर इन नारर्दन इण्डिया डयूरिंग द एटीन्थ सेन्चुरी, दिल्ली, 2011

Corresponding Author

Krishan Kumar*

Extension Lecturer, Department of History, SMSD Govt. College Nangal Chaudhary

krishankumaragarwal3@gmail.com

[29] डॉ. शिवदत्त दान बारहट जोधपुर राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त, पृष्ठ 180
[30] पी॰एन॰ चैपड़ा, लाइफ एण्ड लैटर्स अंडर द मुगल्स, पूर्वोक्त, पृष्ठ 92
[31] नुरूद्दीन मलिक जहाँगीरनामा, हिन्दी अनुवाद, ब्रजरत्न दास, काशी, द्वितीय संस्करण, 1990, पृष्ठ 390
[32] डॉ. शिवदत्त दान बारहट जोधपुर राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त, पृष्ठ 181

www.ignited.in